eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

नागार्जुन की हिन्दी कविताओं में प्रकृति का दृश्यात्मक वर्णन

[1]डॉ0 वाचस्पति

[1]एसोसिएट प्रोफेसरः हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू कॉलेज एटा (उ0प्र0)

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति के एक रूप दृश्य का वर्णन मिलता है। सामने जैसा दिख रहा है उसे वैसा ही कविता में उतार दिया गया है। कई बार साहित्य–चिंतकों और काव्य शास्त्रियों के बीच इस पर चर्चा हुई है कि क्या अविधा में भी महान कविता संभव है।

Key words:- नागार्जुन, हिन्दी कविता, प्रकृति, दृश्यात्मक वर्णन।

क्या केवल दृश्य वर्णन को उत्तम कविता कहा जा सकता है? मेरे अनुसार अविधा में अवश्य ही महान कविता संभव है। काव्य में दृश्य–वर्णन अविधा में ही होते हैं। निराला की कविता 'संध्यासुंदरी' अविधा में लिखी गई अच्छी कविता है। 'रामचरितमानस' में राम के वनगमन का दृश्य अपने आप में उत्तम काव्य का उदाहरण है। इस स्थल पर साहित्याचार्य रामचन्द्र शुक्ल की पंक्ति का हवाला देना चाहता हूँ–

"इसी प्रकार प्राकृतिक दृश्यवर्णन मात्र की, चाहे कवि अपने हर्ष आदि का कुछ भी वर्णन न करे, हम काव्य कह सकते हैं। हिमालय वर्णन को यदि हम कुमारसंभव से निकालकर अलग कर लें तो वह एक उत्तम काव्य कहला सकता है।"1

नागार्जुन की ऐसी ही कविता है– 'बदलियाँ चलेंगी साथ'–

लगता है
सैर करने के मूड में
बदलियाँ इधर से ही
निकली हैं

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

भिगो गई है.

भुरभुरे खेतों को

कोलतार–पुती पक्की सड़क की

बाँकी–तिरछी 'काया को

बगीचियों के आग्र–कुंजों को

चिकने पातों को

तर कर गई हैं

चमक रहे हैं वे तोऽऽ 2

एक अन्य कविता लें जिसमें एक अन्य दृश्य का वर्णन है। कवि जेठ मास के बारे में सूचित कर रहा है–

गुजर गया आधे से अधिक जेठ मास

पंक्तिबद्ध पुष्पित खड़े हैं अमलतास

दूर से तो दिखते हैं पीले–पीले उदास

छिपाये नहीं छिपता अन्दर का हुलास

फूल होंगे सौ हजार, पत्ते, ओफ्फो, सौ पचास

गुजर गया आधे से अधिक जेठ मास 3

इन कविताओं में व्याख्या की कोई गुंजाइश नहीं है। कवि प्रकृति–रूपों का दृश्यवत चित्रण कर रहा है।

प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन–क्रम में उल्लेखनीय है कि प्रकृति का एक रूप जिस पर नागार्जुन ने सर्वाधिक लिखा– 'बादल' है। बादल सभी को प्रिय हैं। ये केवल मौसम का मिजाज ही नहीं बदलते, धरती का रूप भी बदल देते हैं। मानसून पर हुए नए अध्ययनों से अब यह हकीकत और भी स्पष्ट हो गई है कि भारतीय किसानों की धड़कन हैं ये बादल। कारण कि इनसे एक बड़े वर्ग की रोजी–रोटी चलती है। भारतीय किसानों की खेतीबारी इन्हीं के भरोसे तब भी थी, अब भी है। संभवतः इसीलिए बारिश की संभावना से ही कवि पुलकित हो उठता है। ठीक वैसे ही जैसे कोई किसान बारिश का

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

कयास लगा बैल–हल ले खुशी–खुशी अपने जोत की ओर चल देता है। नागार्जुन बादलों की एक–एक गतिविधि को भाँप रहे हैं और उन्हीं की लय में लय मिलाकर लिखते है.

जाने, किधर से
चुपचाप आकर
हाथी सामने लेट गए हैं.
जाने किधर से
चुपचाप आकर
हाथी सामने बैठ गये हैं
पहाड़ों – जैसे महाविशाल
भूरी रंगत वाले
लो ये गिरि–कुंजर
        और भी बड़े होने लगे
विशाल, महाविशाल
लो, ये दूर हट गए
        पूरे आसमान में
        फैल जाएँगे
        गर्जन – तर्जन नहीं
        बरसेंगे, बस बरसते रहेंगे चुपचाप !
सारा–सारा दिन, सारी–सारी रात
बिना कहे, आपो आप
चुपचाप !!4

इसी रंगत की एक दूसरी कविता है– 'रातों रात भिगो गए बादल'

        मानसून उतरा है
जहरीखाल की पहाड़ियों पर

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

रातोंरात

भिगो गए बादल

सलेटी छतों वाले कच्चे–पक्के घरों को

रातोंरात

सोंधी भाफ छोड़ रहे हैं

ज्यामितिक आकृतियों में

फैले हुए खेत। 5

इसी कविता में बरसात को कवि "मौसम का पहला वरदान" कहता है, जो सभी तक पहुँचता है। पहाड़ों के दृश्य जो बड़े ही आम हैं – अचानक चारों तरफ से बादलों का आ जाना तो कभी कुहरे का छाना, कभी दोनों की आँखमिचौली। कवि बदलियों की रासलीला पर लिखता है –

देखो देखो !

बादलों को निगल गए कोहरे...

देखो देखो !

कोहरों को उगल रहे बादल

इनकी यह लीला अभी चलती रहेगी

चलता रहेगा रास बदलियों का

काले–काले बादल

झूमते नजर आएँगे कभी–कभी।

कभी–कभी कोहरा ही कोहरा होगा इर्द–गिर्द

लगेगा कभी कि बादल

काफी नीचे झुक गए हैं

वो अपनी सूँड लटकाकर

झरनों से पानी लेंगे

एक–एक बूँद जल खींच लेंगे।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

तब वो हाथी नज़र आएँगे

बादल नहीं होंगे तब..... ।6

वैसे तो नागार्जुन ने बादलों के और भी बहुत–चित्र खींचे हैं, लेकिन उक्त चित्रों से उनकी वृत्ति स्पष्ट हो जाती है। बादल के ये चित्र कल्पना के माध्यम से बिम्ब निर्मित करते हैं, जिसकी दृश्यता सर्वभूत है।

प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण सदैव कमनीय रहा है। हम जानते हैं कि कवि प्रकृति के कई व्यापारों का परस्पर संबंध दिखाकर अधिक संश्लिष्ट योजना का प्रत्यक्षीकरण करवा सकता है, पर इसके लिए विस्तृत और गूढ़ निरीक्षण अपेक्षित होता है। बरसात में नागार्जुन द्वारा प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण मिलता है, पर गुंजाइश अभी है। इसे परिपाक नहीं कह सकते, जो संस्कृत काव्यों में मिलता है। वाल्मीकि और कालिदास द्वारा वर्णित बरसात के चित्र का उल्लेख करते हुए शुक्ल जी लिखते हैं–

''वाल्मीकि के 'मुक्तासकाशं' वाले श्लोक में पानी की बूँदों का आकाश से गिरना, गिरकर पत्तों की नोकों पर लगना और चिड़ियों के पंखों का बिगड़ना, चिड़ियों का पत्तों की नोक पर लगी बूँदों को पीना इतने अधिक व्यापार एक संबंध सूत्र में पिरोए गए हैं। इसी प्रकार कालिदास ने हिमालय के पवन के साथ भागीरथी के जलकण का फैलना, देवदारू के पेड़ों का काँपना, मोर की पूँछों का छितराना, किरातों का मृगों की खोज में निकलना और वायुसेवन करना, इतने व्यापारों का परस्पर संबंध दिखाया है।

बरसात का एक उदाहरण –

विस्थापित होते हैं।

बरसात में

कीड़े–मकोड़े

खिसकती हैं चट्टानें

शिला वृष्टि के

उछलते हैं रोड़े

गरजते हैं बादल के

घोड़े

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

हम भी मात्र

दर्शक रह जाते हैं

थोड़े !7

प्रकृति संबंधी कविताओं पर गौर करने से पता चलता है कि प्रकृति के कुछ रूप नागार्जुन को अति प्रिय हैं, जो बार बार उनकी कविता में आते हैं। बर्फानी घाटियाँ, देवदार, चिनार आदि का बार–बार उल्लेख उनके पर्वतीय प्रकृति से सानिध्य का फल है–

1. दस हजार फुट ऊँचाई पर, दुर्गम बर्फानी घाटी में

देवदार के सघन वनों में चुह–चुह करते फिरें छछुन्दर।

(जयति जयति सर्वमंगला)

2. दुर्गम बर्फानी घाटी में

शत – सहस्र फुट ऊँचाई पर

अलख नाभि से उठने वाले

निज के ही उन्मादक परिमल–

(बादल को घिरते देखा है)

3. बरफ की सफेदी, चिनार, देवदार, अखरोट.....

(मेरे बच्चे)

4. सजीले प्रिय देवदार!

कौन भला, तुमको

यहाँ पर लाया उतार?

तुम्हारी निवास भूमि

जलधि तल से

ऊपर, अति ऊपर

फुट जहाँ सात–आठ–नौ हजार

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

ओ हे, तुम
पहाड़ी तरूओं में, पाहुन उदार
सजीले प्रिय देवदार।

(सजीले प्रिय देवदार)

5. रंग विरंगी फूलों वाली
हरियाली से ढकी पहाड़ी
देवदास की, सरो–चीड़ की
कोसों फैली हुई कतारें
उन ऊँचे हिमालय शिखरों के
अद्‌भुत और विचित्र नजारे
इन दृश्यों के बीच बैठ जब
कालिदास के पद गाता हूँ
तब मैं तुम्हें भूल जाता हूँ।

(तब मैं तुम्हें भूल जाता हूँ)

इस तरह की प्रकृति संबंधी कविताओं के नागार्जुन की प्रकृति संबंधी कई कविताएँ ऐसी हैं, जो विवरण देती हुई हैं। अत्यंत साधारण शैली में एक कविता की आखिरी कुछ पंक्तियाँ –

अरे हाँ, इस झुरमुट में
नीम भी छिपा है
नीचे गली के किनारे होता तो उसे
दतौन बनाकर जाने कब
चबा गए होते !
गनीमत है –
गली के किनारे नीचे नहीं है खड़ा

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

नीम का यह पौधा बड़भागी है।8

वस्तुतः ये कविताएँ ऐसी हैं, जिनमें कवि का काई विवक्षित अर्थ नहीं है, न कोई सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिप्रेक्ष्य, न ही कोई अन्य सरोकार सवाल है, तब ऐसी कविता कवि ने लिखी ही क्यों? इसका सीधा सा जवाब है कि कवि का अपने आसपड़ोस के सभी सजीव–निर्जीव से गहरा लगाव है। ये कवि के भावनात्मक संबंध की अभिव्यक्ति हैं। जिस प्रकार प्रत्येक मानव किसी सुन्दर रूप के प्रति आसक्त होता है उसी प्रकार कवि के लिए प्रकृति या जगत के छोटे–छोटे, यहाँ वहाँ बिखरे रूप सौन्दर्य के आलंबन हुए है। जरूरी नहीं कि आलंबन का हर विषय महानता का सूचक हो, भव्य–विशाल और सर्वप्रिय हो। वह कुछ भी हो सकता है। आचार्य शुक्ल ने अपने निबंध "काव्य में प्राकृतिक दृश्य" में लिखा है –

"स्वाभाविक सहृदयता केवल अद्‌भुत, अनूठी, चमत्कारपूर्ण विशद् या असाधारण वस्तुओं पर मुग्ध होने में ही नहीं है। जितने आदमी भेड़ाघाट, गुलमर्ग आदि देखने जाते हैं वे सब प्रकृति के सच्चे आराधक नहीं होते, अधिकांश केवल तमाशबीन होते हैं। केवल असाधारणत्व के साक्षात्कार की यह रुचि स्थूल और भद्दी है और हृदय के गहरे तलों से संबंध नहीं रखती।"9

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की ही मान्यता है कि – कविता में जब प्राकृतिक दृश्य का अवस्थान हो तो वहाँ 'अर्थग्रहण' से अधिक 'बिम्बग्रहण' अपेक्षित होता है। नागार्जुन प्राकृतिक दृश्यों का पाठक द्वारा 'बिम्बग्रहण' करवाने में बार–बार सफल हुए हैं। "नीले आसमान में" नामक कविता में पूरा एक दृश्य आँखों में उतर जाता है। और पाठक भी वही अनुभव करता है जैसा कवि ने उस दृश्य से किया होगा

नीले आसमान में
उड़े जा रहे हैं
सफेद–सफेद बगुले
कितनी दूर मंजिल है ?
क्या आगे भी तलैया है कोई ?
वहाँ भी छोटी–छोटी मछलियाँ
इनका शिकार बनने को तैयार है ?
बच्चे ही नहीं सयाने भी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

नीले, भूरे या काले पतंगें उड़ाकर
इन श्वेत विहंगों का
पीछा कर रहे हैं
नीले आसमान में।

एक और उदाहरण बिम्ब का 'भरे–भरे मायावी बादल' से

छोटे–बड़े मझोले बादल
आपस में कुश्तियाँ लड़ेंगे
अभी–अभी तो लगता मुझको
सचमुच ही ये बरस पड़ेंगे।

प्रकृति के एक–एक अस्तित्व से नागार्जुन की आत्मीयता है। उससे केवल संबंध ही नहीं बनाते बल्कि संवाद करते हैं। प्रकृति से एक मित्र की तरह बात–चीत करने में नागार्जुन का मन खूब रमता है। ऐसी ही कविता 'यह तो वो नहीं है'३३.

यह तो वो नहीं है !
क्या मैं रोज यहीं बैठता था
क्या नाशपाती का वही पेड़ है यह
मैं ऐसे भला क्यों मान लूँ
क्या हम इसी की छाँह में
विगत ग्रीष्म के
मध्याहन गुजारते थे–
सफरी पलंग पर लेटकर
क्या हम यहीं बैठते थे
मूँज की रस्सियों वाले मूढ़े पर
ढाई साल वाले उस शिशु से

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

मैंने यहीं तो दोस्ती गांठी थी

नागार्जुन अपनी कुछ प्रकृति संबंधी अन्य कविताओं में भी प्रकृति से बातचीत करते मिलते हैं। इसे चाहे तो प्रकृति मानवीकरण कह सकते हैं, पर यह प्रसाद निराला मानवीकरण से भिन्न है। वहाँ भावनाओं क्रियाव्यापारों की आयोजना प्रकृति करती है तो नागार्जुन के यहाँ प्रकृति की अपनी सत्ता स्वतंत्र रहती है। एक उदाहरण उनकी कविता "एक पल" से–

सागर की प्रशांत तरंगों से
बोलो : (जब वो अच्छे मूड्स में हो)
तुम्हारा एक चहेता
तुम्हें सलाम भेज रहा है !
बार–बार अपना शीश झुकाकर
वो तुम तक अपने आकुल चुम्बन
पार्सल कर रहा है!!

संदर्भ–

1. (सं) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– चिंतामणिः द्वितीय भाग, पृ0सं0 26
2. नागार्जुन– अपने खेत में, पृ0सं0 34
3. नागार्जुन– भूल जाओ पुराने सपने, पृ0सं0 57
4. नागार्जुन– आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, पृ0सं0 28
5. नागार्जुन– आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, पृ0सं0 33
6. नागार्जुन– आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, पृ0सं0 36
7. (सं) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– चिंतामणिः द्वितीय भाग, पृ0सं0 21
8. नागार्जुन– भूल जाओ पुराने सपने, पृ0सं0 58
9. नागार्जुन– अपने खेत में, पृ0सं0 24
10. (सं) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र– चिंतामणिः द्वितीय भाग, पृ0सं0 06